CBSE Test Paper 04

Ch-1 नेताजी का चश्मा

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़िए और नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**
   पान वाले के लिए यह एक मजेदार बात थी, लेकिन हालदार साहब के लिए चकित और द्रवित करने वाली। यानी वह ठीक ही सोच रहे थे। मूर्ति के नीचे लिखा 'मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल' वाकई कस्बे का अध्यापक था। बेचारे ने महीने-भर में मूर्ति बनाकर पटक देने का वादा कर दिया होगा। बना भी ली होगी, लेकिन पत्थर में पारदर्शी चश्मा कैसे बनाया जाए,- काँचवाला, यह तय नहीं कर पाया होगा या कोशिश की होगी और असफल रहा होगा। या बनाते-बनाते 'कुछ और बारीकी' के चक्कर में चश्मा टूट गया होगा या पत्थर का चश्मा अलग से बनाकर फिट किया होगा और वह निकल गया होगा।

   i. मूर्ति के नीचे क्या लिखा था?
   ii. मोतीलाल कौन था और उसने क्या वादा किया?
   iii. पान वाले के लिए क्या मजेदार बात थी?

2. हालदार साहब को पानवाले की कौन-सी बात अच्छी नहीं लगी और क्यों?

3. नेताजी का चश्मा पाठ के आधार पर लेखक द्वारा वर्णित कस्बे का चित्रण कीजिए।

4. आशय स्पष्ट कीजिए
   "बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-जिंदगी सब कुछ होम कर देने वालें पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूंढती है।"

5. हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुककर नेताजी की मूर्ति को क्यों निहारते थे?

6. हालदार साहब को नेताजी की मूर्ति को देखकर कैसा अनुभव हुआ था और क्यों? पहली बार में पान के पैसे चुकाकर जब वे चलने लगे तो वे किसके प्रति नतमस्तक हुए थे?

CBSE Test Paper 04

Ch-1 नेताजी का चश्मा

Answer

1. i. मूर्ति के नीचे लिखा था 'मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल'।
   ii. मोतीलाल कस्बे के एक विद्यालय में कला विषय का अध्यापक था और उसने जैसे-तैसे मूर्ति एक माह में बना कर देने का वादा किया था।
   iii. पान वाले के लिए मजेदार बात यह थी कि मूर्तिकार मूर्ति पर चश्मा लगाना भूल गया था क्योंकि वह कैप्टन की भावनाओं से अपरिचित था उसे यह बात अजीब लगती थी और लोगों की उत्सुकता देख कर पानवाले को बड़ा मजा आता था।

2. हालदार साहब द्वारा कैप्टन के बारे में पूछने पर पानवाला कहता है कि कैप्टन तो लंगड़ा है, वह फ़ौज में क्या जाएगा | वह तो पागल है, पागल | पानवाले के द्वारा कैप्टन का इस प्रकार मजाक उड़ाया जाना हालदार साहब को अच्छा नहीं लगा क्योंकि शारीरिक रूप से असमर्थ होते हुए भी कैप्टन के मन में नेताजी के प्रति सम्मान की भावना थी | नेताजी की चश्माविहीन मूर्ति उसे आहत करती थी इसलिए वह उस पर चश्मा लगा देता था |

3. कस्बा बहुत बड़ा नहीं था। उसमें कुछ पक्के मकान थे, एक बाजार था, लड़के और लड़कियों का एक स्कूल,सीमेंट का एक छोटा सा कारखाना था। दो ओपन एयर सिनेमा घर और एक नगरपालिका थी।बीच शहर के मुख्य बाजार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा थी।

4. उपरोक्त पंक्ति का आशय है कि जो लोग देश की खातिर अपने प्राणों की परवाह न करते हुए अपना सर्वस्व न्योछावर करने से भी पीछे नहीं हटे, उन लोगों का आज की पीढ़ी द्वारा उपहास बनाया जाता है | इस तरह के लोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए स्वयं को बेचने के लिए हमेशा तैयार रहती है | अर्थात् अवसर मिलते ही ये अपने स्वाभिमान को को भी भूल जाते हैं | इस प्रकार की जाति, वर्ग और समुदाय किसी भी देश की उन्नति नहीं कर सकते |

5. हालदार साहब रोज़ चौराहे पर रूककर नेताजी की मूर्ति इसलिए निहारते थे क्योंकि वे देशभक्त थे | उनके मन में नेताजी की प्रतिमा के प्रति लगाव था | इसके अतिरिक्त रोज़ चश्मे का फ्रेम बदलने के कारण भी उन्हें मूर्ति देखने की उत्सुकता रहती थी |

6. नेताजी की पत्थर की मूर्ति पर चश्मे का असली फ्रेम देखकर हालदार साहब को बड़ा ही विचित्र लगा था | पहली बार पान के पैसे चुकाकर जब वे चलने लगे तो देशभक्तों के प्रति कैप्टन की श्रद्धा और सम्मान की भावना देखकर वे उसके प्रति नतमस्तक हो गए |